D.B. COLLEGE. JAYNAGAR. BIHAR.
DEPARTMENT of POLITICAL SCIENCE
B.A Part-II (HON'S) Paper-IV

DR. A.K. Yadav
Asstt Prof (G.Polit)
Date- 22-07-20

(Comparative Government and politics)

Lecture-No- 17

आधुनिक तुलनात्मक राजनीति का महत्व —

आधुनिक तुलनात्मक राजनीति में अनेक कमियों के बावजूद राजनीतिक व्यवहारों के बारे में सुनिश्चित स्पष्टीकरण व व्यवस्था करने का प्रयत्न किया गया है। वस्तुतः आधुनिक तुलनात्मक अध्ययनों ने राजनीतिक व्यवस्थाओं के अध्ययन में रुचि बढ़ायी है। आज विश्व में 190 से अधिक प्रभुता प्राप्त देश हैं। स्वतंत्र राष्ट्रों की जनता अब उपनिवेशों के प्रजाजनों की भाँति सीधी व नम्र नहीं रही है। आज के समुदाय पूर्व की तुलना में कहीं अधिक राजनीतिकृत हैं। सभी देशों में जनसाधारण की राजनीतिक सहभागिता बढ़ रही है साथ ही प्राक् विकसित देशों के नागरिक भी पूर्व की अपेक्षा अधिक राजनीतिकृत हो गये हैं और वे अपनी सरकारों से विभिन्न समस्याओं का वृद्धिपूर्ण मात्रा में निराकरण चाहने लगे हैं। वर्तमान सदी में संचार के क्षेत्र में भी एक क्रांति हुई है। जनसाधारण तक पहुँचने के प्रचार माध्यमों ने जनसाधारण में राजनीतिक जागृति को बहुत बढ़ाया है। तुलनात्मक राजनीति, राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन करती है और उसे समझने और समझाने में बहुत सहायक है। इसके द्वारा राजनीति के अध्ययन को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया गया है तथा राजनीति में व्यवहारिक सामान्य नियमों अथवा सिद्धांतों का निर्माण किया गया है।

तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के साधारण रूप में दो प्रयोजन हैं, जिसे हम संक्षेप में इस प्रकार रख सकते हैं। प्रथम यह हमें विदेशों में शासन और राजनीति के क्षेत्र में घटी और संभावित घटनाओं को अच्छी तरह से समझने में सहायता करती है। इसप्र- विभिन्न राज्यों की शासन पद्धतियां उनकी ऐतिहासिक व भौगोलिक दशाओं, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक संस्थाओं तथा विचारों से निर्धारित होती हैं। अधिकतर देशों में शासन पद्धति और विचारधारा का गहरा सम्बन्ध है।

तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन क्षेत्र अन्तः अनुशासनात्मक होने के कारण अन्य विद्यार्थियों के लिए भी विभिन्न कारणों से उपयोगी है। किसी भी देश के विद्यार्थियों के लिए

P.T.O

Scanned with CamScanner

यह एक प्रकार से विदेशों की मार्गदर्शिता के समान है। विद्यार्थी को अन्य देशों के बारे में अनेक प्रकार की उपयोगी व शिक्षाप्रद जानकारी प्राप्त होती है। ऐसे यदि हम हाल ही में स्वतंत्र हुए कुछ अल्पविकसित देशों की राजनीतिक पद्धतियों की तुलना करें तो उनमें से प्रत्येक में पुराने विदेशी शासकों द्वारा वहीं कायम की गयी संस्थाओं और उनकी परम्पराओं का ज्ञान उनके वर्तमान अन्तरों को समझने के लिए प्राप्त करना अति आवश्यक है। इनका ज्ञान हमें तुलनात्मक अध्ययन द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।

दूसरे शब्दों में संरचनात्मक कार्यात्मक उपागम राजनीतिक पद्धतियों की गहराई में परिष्कृत परिभाषा की ओर जाने का प्रयास करता है। यह प्रत्येक पद्धति में सबसे अधिक महत्वपूर्ण संस्थाओं को जानने तथा उनके राजनीतिक अन्तरों व समानताओं के वर्गीकरण व स्पष्टीकरण तक पहुँचने का प्रयत्न करता है। हम इससे राजनीतिक व्यवहार और सरकार कार्यों के बारे में परिकल्पना का निर्धारण कर सकते हैं और ऐसे शब्दों में जिनकी सहायता से हम विभिन्न राजनीतिक पद्धतियों की तुलना कर सकें।

By- DR. A.K. Yadav
(Pol. Sc.)
(Asstt. Prof. G.P.T.T)

Date - 22-07-20

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT of POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR, BIHAR
DR. A.K. Yadav
(Asstt. Prof
L.N.M.U)

B.A Part-II (HON'S) Paper-IV

Date - 22-07-20

(Comparative Government and Politics)

Lecture-No- 18

परम्परावादी और आधुनिक तुलनात्मक राजनीति में अंतर—

परम्परावादी और आधुनिक तुलनात्मक राजनीति अलग-अलग समय काल और परिस्थिति का अध्ययन करती है। जिसके परिणाम-स्वरूप इसमें कुछ प्रमुख अंतर दृष्टिगोचर होते हैं जिसका विवरण संक्षेप में इस प्रकार है—

परम्परावादी तुलनात्मक राजनीति	आधुनिक तुलनात्मक राजनीति
(1) यह वस्तुतः अतुलनात्मक है।	(1) यह सही अर्थों में तुलनात्मक विश्लेषण और परीक्षण पर आधारित है।
(2) इसकी तुलना का क्षेत्र सीमित है क्योंकि यह शासन विधानों की तुलना पर भी निर्भर है।	(2) इसमें तुलना का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है क्योंकि यह शासन विधानों के साथ-साथ राजनीतिक और अराजनीतिक तत्वों के विश्लेषण को भी पर्याप्त महत्व देती है।
(3) यह वस्तुतः वर्णनात्मक है। यह मात्र ढाँचे के अध्ययन पर आधारित है।	(3) यह अनुभवात्मक विश्लेषण पर आधारित है और ढाँचे के अतिरिक्त अवसंरचना को भी महत्वपूर्ण मानती है।
(4) यह गतिहीन है क्योंकि सजीव राजनीतिक तत्वों की उपेक्षा करती है।	(4) इसके विपरीत सजीव और जीवन्त राजनीतिक प्रश्नों पर आधारित है।
(5) इसमें मूल्य सापेक्ष राजनीतिक सिद्धांत के निर्माण पर बल दिया जाता है।	(5) यह मूल्य मुक्त राजनीतिक सिद्धांत के निर्माण पर बल देती है।
(6) इसमें राज्यों एवं सरकारों के सीमित अध्ययन पर अधिक बल दिया जाता है।	(6) इसमें राज्य, सरकारों के वृहद अध्ययन के साथ-साथ अन्तः अनुशासनात्मक दृष्टिकोण पर अधिक बल दिया गया है।

Date- 22-07-20

BY- DR. A.K. Yadav (Pol.Sc)
(Asstt. Prof L.N.M.U)

Scanned with CamScanner